समकालीन कलाकार यामिनी राय की कला में लोक–तत्व

संध्या मौर्य
शोधार्थिनी (जे0आर0एफ0)
बैकुण्ठी देवी कन्या
महाविद्यालय, आगरा

शोध–पत्र सारांश– मानव जीवन का इतिहास कला के साथ ही प्रारम्भ हुआ है लोक कला सामान्य जनमानस की कला है। लोक कला किसी भी व्यक्ति के स्वतंत्र विचारों की अभिव्यक्ति है। बंगाल के चित्रकार यामिनी राय ने लोक कला से प्रेरणा लेकर अपनी अलग चित्र शैली का निर्माण किया। यामिनी राय भारत के प्रथम लोक कलाकार माने जाते है। आज उनकी कला दुनिया भर में अपनी पहचान बना चुकी है।अजित कुमार दत्त ने यामिनी राय के बारे में लिखा है– ''कला उनके लिए अन्वेषण व जीवन का आदर्श थी। देश को उससे जो एक सुसंगत वक्तव्य प्राप्त हुआ वह आज भी कला के संदर्भ में बहुत बड़ी उपलब्धि है।''

शब्द कुंज :– कलाकार, लोक तत्व, रेखा।

उद्देश्य–यामिनी राय के चित्रों के रंगो, विषय, रेखा, तकनीक का वर्णन किया गया है। आधुनिकता के साथ यामिनी राय का प्रयोग एक तरह से कला के रूप में लिए खोज जैसा था।

प्रस्तावना– प्राचीन भारतीय चित्रकला का समयानुसार परिवर्तित होता परिवेश ही आधुनिक भारतीय चित्रकला के रूप में दृष्टिगोचर होता है। भारतीय चित्रकला सदा से ही धर्म, सत्य और नैतिक आदर्शों की संवाहिका रही है। यह व्यक्ति की चिरस्थायी कीर्ति और संस्कृति की शाश्वत निधि ही नहीं अपितु अपनी प्रमुख प्रेरणा के कारण भी है। यह हमारे हृदय के भावों एवं विचारों को तृप्त करती है।

आधुनिक कला से तात्पर्य समकालीन कला परम्परा से है। देश की स्वतंत्रता के साथ जहां राष्ट्रीय आन्दोलन हुए, वहीं, कला के नैतिक मूल्यों में भी परिवर्तन हुए। परम्परागत कला को आदर्श कल्पना का स्थान पाश्चात्य वादों तथा कलाकार के अहम ने ले लिया। आज का कलाकार सांसारिक जगत में फैली हुई कुरीतियों के कारण विद्रोही हो गया है। कलाकार का उद्देश्य शासन या समाज को सन्तुष्ट करना नहीं वरन् आत्मभिव्यक्ति की भूख को शान्त करना है। परिणामतः आज की कला आत्मनिष्ठ या व्यक्तिगत शैली पर आधारित हो गयी है जिसमें कलाकार की कल्पना उसे नए प्रकार से प्रयोग तथा संयोजन को बाध्य करती है।

कलाकार उन भावों को अभिव्यक्त करना चाहता है जिसे वह अपने हृदय की गहराई में अनुभव करता है। यही कारण है कि आधुनिक कला में यत्र तत्र लोक रूप एवं लोक तत्व भी दिखाई देते रहते है। लोक शब्द लोक दर्शन से बना है जिसका अर्थ है देखना, लोककला सभी कलाओं की आधार शिला है।

प्रो0 ए0के0 हल्दर ने लिखा है कि–''लोक–कला परम्परागत कला का वह आवश्यक स्वरूप है कि जिसकी उपेक्षा गवांरू और ऊबड़खाबड़ कला कहकर नहीं की जा सकती है, इसका सम्बन्ध मानव की भावनाओं से सीधा है।''

आधुनिक चित्रकारों में लोक–कला से प्रेरित एक ऐसे ही चित्रकार है यामिनी राय। इनका नाम भारत के महान चित्रकारों में गिना जाता है। वे 20वीं शताब्दी के महत्वपूर्ण आधुनिकतावादी कलाकारों में से थे, जिन्होने अपने समय की कला

परम्पराओं से अलग एक नई शैली स्थापित करने में अहम भूमिका निभाई। यामिनी राय का जन्म 11 अप्रैल 1887 में पश्चिम बंगाल के बांकुड़ा जिले में 'बेलियातोर' नामक गॉव में एक समृद्ध जमींदार परिवार में हुआ। उनका प्रारम्भिक जीवन गॉव में ही बीता। जिसका गहरा असर यामिनी राय के आरम्भिक वर्षों के कार्यों पर पड़ा। सन् 1903 में 16 वर्ष की आयु में यामिनी राय ने कोलकत्ता के 'गवर्नमेंट स्कूल आफ आट्र्स' में दाखिला लिया, यहॉ मिले प्रशिक्षण ने यामिनी राय को चित्रकारी की विभिन्न तकनीकों में पारंगत होने में मदद की। यामिनी राय ने धीरे–धीरे महसूस किया कि न तो पाश्चात्य तकनीक और न ही अवनीन्द्र नाथ टैगोर की बंगाल शैली उन्हे आकर्षित करती है।

Mulk Raj Anand had observed that, "Jamini Roy has suddenly decided to cut himself adrift from the Urban style of Art and went back to the folk art of his village"

1920 के दशक में उनके जीवन में महत्वपूर्ण मोड़ आया जब राष्ट्रीय आन्दोलन ने भी उनकी कला अभिव्यक्ति की नई शैली की खोज में योगदान दिया। यह एक ऐसी शैली थी जिसमें वे आत्मीय व भावनात्मक रूप से जुड़ पाए। जैसे–जैसे वह मूल रूप विधान और प्राथमिक रंगों से जुड़ते गए, उनकी कला अत्यधिक सृजनात्मक और प्रतीकात्मक होती गई।

Rolf Holiaanader remarked that, "Jamini Roy"s art was deeply rooted of the Folk Art traditions of Bengal.

1920 के दशक के अन्तिम सालों तक यामिनी राय स्थानीय लोक कलाओं और शिल्प परम्पराओं में प्रेरणा ग्रहण करने लगे। इसका परिणाम यह हुआ कि उन्होंने साधारण ग्रामीणों और कृष्ण लीला के चित्र बनाए। पशुओं को भी बड़े विनोदात्मक तरीके से प्रस्तुत किया।

यामिनी राय ने कोलकाता पेंटिंग्स से प्रेरणा ली। सन् 1938 में उनकी कला प्रदर्शनी पहली बार कोलकाता के ब्रिटिश इण्डिया स्ट्रीट पर लगायी गयी। 1940 के दशक में वे बंगाली मध्यम वर्ग और यूरोपीय समुदाय में बहुत मशहूर हो गये। सन् 1954 में भारत सरकार ने उन्हे पधम भूषण से सम्मानित किया।

लोक कला से प्रमाणित चित्र एवं तकनीकी विशेषता– यामिनी राय पर लोक शैली का प्रभाव हमें उनके चित्र गोपिनी मॉ और शिशु, काला घोड़ा सन्थाल बाला, तीन पुजारिनें, गणेश जननी, बोट मेन, शिव दुर्गा, कृष्ण व बलराम, काली बिल्ली इत्यादि पेंटिंग में देखने को मिलता है। अपने चित्र रचना के लिए नए आधारों जैसे–हाट, बॉसी कागज, अखबारी कागज, सामान लपेटने वाले मोटे कागज पर चित्र निर्मित किए। उन्होने गत्ता चूने से पुता कपड़ा तथा प्लाई बोर्ड का प्रयोग किया। यामिनी राय ने रंग के लिए कीमती तैल रंग के ट्यूब, ब्रुश आदि को त्यागकर सस्ते, घरेलू, खनिज रंगों का चित्रों में प्रयोग किया। इस प्रकार एक सस्ती शैली का यामिनी राय ने आविष्कार कर भारतीय कला में एक महान क्रान्ति उत्पन्न की। रंग लगाने की विधि के रूप में उन्होने टेम्परा माध्यम का प्रयोग किया। इनकी रेखाओं में गति और सौन्दर्य है। वह इतनी सशक्त और शानदार है कि वह उनके सपाट रंगो की नीरसता समाप्त कर देती है। इनकी रेखाओं की विशेषता है सरलता जो इसका मुख्य बिन्दु है। सीमित रेखाओं के द्वारा चित्रांकन किया गया है, रेखायें मोटी, सीधी, दृढ़ हैं जिसमें पूर्णता का आभास होता है।

रतन भट्टाचार्या ने इनके बारे में लिखा है कि ''यामिनी राय अजन्ता, कोणार्क तथा टैगोर के चित्रों से प्रभावित न होकर अपनी एक अलग शैली बनायी जो भारत के आधुनिक कलाकारों के लिए प्रेरणा है।''

निष्कर्षः– यामिनी राय के सृजन का सर्वाधिक महत्वपूर्ण तत्व विशुद्ध लयात्मक रेखाओं की अभिव्यक्ति है, जिनकी वक्रता तथा दीर्घ वृत्ताकार आकृतियों को एक ओजस्वी रूप देता है। परम्परा से पूर्णतः अलग हटकर कार्य करने का साहस इन्होने किया। यामिनी राय ने अपनी कला में विदेशीपन तथा भारत की लुप्त प्रायः परम्पराओं का निर्जीव अनुकरण नहीं किया वरन् लोक जीवन में व्याप्त प्रतीकों को चिर नूतन बनाया।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. प्रताप, रीता 'भारतीय चित्रकला एवं मूर्तिकला का इतिहास' राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी जयपुर, ISBN-978-93-5131-257-4, 2017
2. मागो, प्राणनाथ ''भारत की समकालीन कला एवं परिप्रेक्ष्य नेशनल बुक ट्रस्ट इण्डिया, नई दिल्ली, ISBN-978-81-237-4617-3, 2011
3. चतुर्वेदी, ममता ''समकालीन भारतीय कला राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी जयपुर, ISBN-978-93-5131-008-2, 2013''
4. भट्टाचार्या, रतन, जामिनी रायः ए ट्रिव्यूट टू द ग्रेट पेन्टर (www.artnewsviews.com)।
5. गैरोला, वाचस्पति, 'भारतीय चित्रकला', मित्र प्रकाशन, इलाहाबाद–1963।
6. मुखर्जी, राधाकमल 'भारतीय कला का विकास' सरस्वती प्रेस, इलाहाबाद–1964।
7. गुई श्चीरानी, कला दर्शन, साहनी प्रकाशन, दिल्ली–1953।